21वीं शताब्दी में उत्तर प्रदेश में कृषि विकास– आगरा जिला के सन्दर्भ में एक अध्ययन

व्यावहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विषय से पी०एच०डी० की उपाधि हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक :

डॉ० सुनेश्वर प्रसाद
असि० प्रोफेसर
व्यावहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग

शोधार्थी

प्रशान्त कुमार

व्यवहारिक व्यावसायिक अर्थशास्त्र विभाग, वाणिज्य संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग आगरा – 282005

2021

आर्थिक विकास का परिचय : प्रस्तावना

वर्तमान सदी में कृषि विकास समस्त चर्चाओं का केंद्र बिंदु है। यह आर्थिक जगत की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या तथा समाज के विकास प्रक्रिया का एक अग्रिम सोपान है। यही कारण है कि समाज के सभी वर्गों में इस समस्या को जाना–समझा जाता है। इस क्रम में लोग 'आर्थिक विकास' को विकास, आर्थिक संवृद्धि अथवा संवृद्धि आर्थिक प्रगति अथवा प्रगति एवं औघौगिकरण आदि नामों से जाना जाता है। अतः आर्थिक विकास के अध्ययन के प्रति अर्थशास्त्रियों की रुचि प्रारम्भ से ही रही है।

कृषि विकास की आवश्यकता एवं महत्व आधुनिक समय में दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है। आज विश्व का प्रत्येक राष्ट्र चाहे वह पूंजीवादी, समाजवादी अथवा चाहे वह मिश्रित अर्थव्यवस्था वाला हो, आर्थिक विकास को गति प्रदान करने के लिए सदा प्रयत्नशील है। आर्थिक विकास का महत्व यदि विकसित देशों के लिए विकास को निरंतर बनाए रखने से है तो अल्पविकसित एवं विकासशील देशों के लिए कृषि विकास का महत्व अपनी गरीबी अथवा निर्धनता पिछड़ेपन तथा अस्वाभाविक घुटन से छुटकारा पाने में निहित है। अतः अल्प विकसित देशों के लिए विकास की समस्या का महत्व 'अल्पविकास की समस्या है।

कृषि विकास का अर्थ

कृषि विकास वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कोई देश अपने मानवीय प्रयासों द्वारा अर्थव्यवस्था के सभी क्षत्रों में उत्पादन में वृद्धि कर अपनी प्रतिव्यक्ति आय में वृद्धि करते हुए देश की निर्धनता, विषमता और बेकारी अथवा बेरोजगारी को समाप्त कर जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयास करता है।

कृषि का अर्थव्यवस्था में योगदान –

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी रही है। कृषि क्षेत्र में देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कार्यरत है। पिछले कुछ दशकों के दौरान, अर्थव्यवस्था के विकास में मेनयुफेक्चरिंग और सेवा क्षेत्रों का योगदान तेजी से बढ़ा है जबकि कृषि क्षेत्र के योगदान में लगातार गिरावट हुई है। 1950 के दशक में जी डी पी में कृषि क्षेत्र का योगदान जहॉ 50 प्रतिशत था वहीं 2015–16 में यह गिरकर 15.4 प्रतिशत रह गया है।

उत्पादन –

कृषि सम्बन्धी ऑकड़ों का अवलोकन करें तो कृषि विकास दर वर्ष 2016–17 में 4.9 प्रतिशत थी। आर्थिक सर्वेक्षण के आधार पर कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों का देश के सकल घरेलू उत्पान (जीडीपी) में 17.8 प्रतिशत योगदान है। किसी समय में आयात पर निर्भर रहने वाला भारत आज 27.568 करोड़ टन खाद्यानों का उत्पादन कर रहा है। भारत गेहूॅं, धान, दलहन, गन्ना और कपास जैसी अनेक फसलों के चोटी के उत्पादकों मं शामिल है। भारत इस समय दुनिया का दुसरा सबसे बड़ा सब्जी और फल उत्पादक देश बन गया है।

रोजगार–

रोजगार के क्षेत्र में देश में खेती–बाड़ी के साथ पशुपालन, बागवानी, मुर्गी पालन, मछली पालन, वानिकी, रेशम कीट पालन, कुक्कुट पालन व बत्तख पालन आमदनी बढ़ाने का एक अहम हिस्सा बनता जा रहा है। देश की राष्ट्रीय आय का एक बड़ा हिस्सा कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों से प्राप्त होता है। देश के कुल निर्यात में 16 प्रतिशत हिस्सा कृषि से प्राप्त होता है। आज भी देश की लगभग आधी श्रमशक्ति कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में ही लगी हुई है।

अन्य उद्योगों को कच्चा माल– कच्चा माल से तात्पर्य हे कि कारखानों में काम आने वाले वे खनिज या वानस्पतिक पदार्थ, जो अपने आरंभिक या प्राकृतिक रूप में हों और जिन्हें मशीनों द्वारा छीक करके या बनाकर उनसे दूसरी बस्तुएं बनाई जाती हैं। दूसरे शब्दों में कच्चा माल उन मूल द्रव्यों को कहते हैं, जिनका उपयोग विधि शिल्पों में उत्पादन कार्य के लिए किया जाता है। जैसे–

1. चीनी मिल के लिए गन्ना
2. वस्त्र उद्योग के लिए रुई
3. काग़ज़ बनाने के लिए बॉस
4. ईख की छोई

5- सन और लोहे के कारखानों के लिए कच्चा लोहा

कृषि पर आधारित उद्योग :–

1. सूती वस्त्र उद्योग
2. ऊनी कपड़ा उद्योग
3. रेशमी वस्त्र उद्योग
4. कृत्रिम वस्त्र उद्योग
5. जूट उद्योग
6. चीनी उद्याग
7. वनस्पति तेल उद्योग
8. चाय उद्योग
9. कॉफी उद्योग
10. चर्म उद्योग

भौगोलिक एवं प्राकृतिक के अनुसार उत्तर प्रदेश की स्थिति

यह प्रदेश पूरब से पश्चिम तक 650 किमी. लम्बा तथा उत्तर से दक्षिण तक 240 किमी. चौड़ा भारत के सीमान्त प्रदेशों में से एक है। उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था, महाराष्ट्र के बाद भारत की दूसरी सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था है। 2017–18 के बजट के अनुसार उत्तर प्रदेश की जीडीपी (राज्यों के सकल देशी उत्पाद) 14.46 लाख करोड़ है। 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश की 22.3 प्रतिशत आबादी शहरी है। बाकी आबादी ग्रामीण है। क्षेत्रवास सकल घरेलू उत्पाद के अनुसार कृषि 23 प्रतिशत, उद्योग 28 प्रतिशत, तथा सेवा 49 प्रतिशत है।

तालिका–1 भारत के मुख्य पॉच राज्यों की जनसंख्या व किसानों की जनसंख्या

क्र. सं.	राज्य	किसानों की जनसंख्या	भारत के किसानों का प्रतिशत	कुल जनसंख्या	भारत की जनसंख्या का प्रतिशत
1.	उत्तर प्रदेश	2,33,25,000	22.23	19,95,81,477	16.49
2.	महाराष्ट्र	1,14,78,075	11.96	11,23,72,972	9.28
3.	राजस्थान	98,45,353	10.23	6,86,21,012	5.67
4.	मध्यप्रदेश	82,14,993	8.56	7,25,97,565	6.00
5.	कर्नाटक	60,38,309	6.29	6,11,30,704	5.05
6.	अन्य राज्य	3,70,40,683	40.73	69,58,89,692	57.51
कुल	**भारत**	**9,59,42,413**	**100**	**1,21,019,34,22**	**100**

Source : census 2011, govt. of India

जनगणना 2011 के अनुसार आंध्रप्रदेश में 60,87,607 कृषक है। वर्तमान में आन्ध्रप्रदेश राज्य को दो भागों में विभाजित किया गया है। आन्ध्रप्रदेश और तेलंगाना। तेलंगाना क्रमशः जून 2014 से बना है। इसीलिए कर्नाटक में 5वां स्थान है। दशमलव ऑकड़ों के कारण प्रतिशत में यहॉ कुछ अन्तर है।

प्रस्तावित अध्ययन में कृषकों का नमूना एक परिभाषित ब्रह्माण्ड से लिया गया है अध्ययन नमूने का चयन भारत की जनसंख्या के आधार पर किया गया है। उत्तर प्रदेश को संचालन के उद्देश्य से एक नमूना क्षेत्र के रूप में चुना गया है। वर्तमान अध्ययन में भारत में खेती करने वालों कृषकों का अधिकतम प्रतिशत जनसंख्या है।

उत्तर प्रदेश में कृषि की भूमिका

कृषि उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। कृषि भारत में सबसे बड़ा रोजगार प्रदान करने वाला क्षेत्र उत्तर प्रदेश है तथा साथ ही साथ अधिकतर व्यवक्यिों का जीवन यापन का साधन कृषि है। यद्यपि 1950 के बाद कृषि का कुल घरेलू उत्पाद में भाग लगाकर कम हुआ है। लेकिन 50 प्रतिशत से अधिक कार्यकारी व्यक्ति इसमें प्रत्यक्ष रूप से रोजगार पाये हुए हैं। इसके अलावा जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि पर आधारित उद्योगों में और कृषि उत्पादों के व्यापार में रोजगाररत है। कृषि बहुत से औद्योगिक उत्पाद कार्य के लिए कच्चा माल उपलब्ध करने तथा साथ ही साथ औद्योगिक उत्पाद के लिए मॉग की पूर्ति की जनक भी कृषि कहलाती है।

उत्तर प्रदेश भारत का वह राज्य है जहॉ सर्वाधिक गेहूॅं, गन्ना, आदि का उत्पाद होता है। एवं उत्तर प्रदेश राज्य का कुल क्षेत्रफल 2,43,286 कि0मी0 है।

उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है तथा लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या पर आधारित है। प्रदेश के आर्थिक विकास में कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है। वर्ष 2014—15 के आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में लगभग 165.98 लाख हैक्टेयर, 68.8 क्षेत्र में खेती की जाती है। कृषि गणना वर्ष 2010—11 के अनुसार उत्तर प्रदेश में 233.25 लाख कृषक है। कृषि की आधुनिक तकनीक का उपयोग कर उत्पादन तथा उत्पादकता में वृद्धि की दिशा में कृषकों की मेहनत एवं प्रयास का ही परिणाम है कि कृषि ने प्रदेश को खाद्य सुरक्षा में आत्मनिर्भर बनाये बयें आवश्यकता से आधिक्य की ओर पहुॅंचाया है।

वर्ष 2015–16 में कुल 88.67 लाख मैट्रिक टन उर्वरक वितरण लक्ष्य के सापेक्ष 108.39 लाख मै0 टन उर्वरक की उपलब्धता करते हुए। 73.64 लाख मै0 टन बीज की उपलब्धता करते हुए 66.85 लाख कु0 बीजे वितरण किया गया। वांछित उत्पादन प्राप्त करने एवं मृता स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिए नाइट्रोजन के साथ साथ फास्फोरस एवं पोटाश के उपयोग पर विशेष बल दिया गया इससे संतुलित उर्वरक प्रयोग को बढ़ावा मिला है।

वर्ष 2015–16 में कुल 84021.09 करोड़ रूपये फसली ऋण वितरण लक्ष्य के सापेक्ष में 66478.89 करोड़ रूपये का फसली ऋण वितरण किया गया। वर्ष 2016–17 में 93212.60 करोड़ रूपये फसली ऋण वितरण लक्ष्य के सापेक्ष में 73271.74 करोड़ रूपये का फसली ऋण वितरण किया गया। जिसमें खरीफ में 30051.07 करोड़ रूपये तथा 43220.67 करोड़ रूपये का फसली ऋण वितरण किया गया है।

वर्ष 2015–16 में 32 लाख किसान क्रेडिट कार्ड वितरण के लक्ष्य के सापेक्ष में 34.18 लाख किसान क्रेडिट कार्ड का वितरित किया गया वर्ष 2016–17 में कुल 35 लाख किसान क्रेडिट कार्ड वितरण लक्ष्य के सापेक्ष में 34.79 लाख किसान क्रेडिट कार्ड का वितरण किया गया।

कृषि विभाग का मूल उद्देश्य कृषि विकास की दर को गति प्रदान करने के साथ–साथ फसलोत्पाद तथा उत्पादकता में वृद्धि करना है। जिससे प्रदेश के कृषकों की आर्थिक स्थिति को सृदृढ कर उनके जीवन स्तर को ऊपर उठाया जा सके। इसके अतिरिक्त प्रदेश की क्षेत्रीय असंतुलन को दूर करने के लिए क्षेत्र विशेष हेतु उपयुक्त योजनाओं का क्रियान्वयन एवं कृषकों को रोजगार के नये अवसर प्रदान करना है।

उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किये जा रहे प्रयास –

- कृषि उत्पादन की विकास दर प्रति वर्ष 5.1 प्रतिशत बनाये रखते हुए खाद्य सुरक्षा प्रदान करने हेतु कृषि की नवीन तकनीकी का प्रचार प्रसार तथा कृषकों से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान।
- विभिन्न फसलों की उत्पादनकता एवं वृद्धि हेतु विभिन्न उपज पालन योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन।

- कृषकों को विभिन्न पारिस्थितिकीय परिस्थितियों में उपयुक्त फसलों से अधिक उत्पादन लेने हेतु विभिन्न योजनाओं के माध्यम से तकनीकी प्रदर्शन का आयोजन एवं उनके परिणामों से कृषकों को परिचित कराना।
- विभाग द्वारा विभिन्न फसलों की उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि हेतु संचालित योजनाओं एवं कार्यक्रमों का क्रियान्वयन।
- कृषि निवेशों की आपूर्ति निर्धारित समय सारिणी के अनुरूप कृषकों के मध्य उपलब्ध कराना।
- कृषि उत्पादन के लिए अपरिहार्य विभिन्न कृषि निवेशों की गुणवत्ता नियंत्रण पर बल देना।
- दैवी आपदाओं यथा बाढ., सूखे की स्थिति आदि में उन परिस्थितियों के अनुसार आकस्मिक योजना बनाकर कृषकों को सही समय पर उचित फसल चक्रों की जानकारी देकर उसी के अनुरूप कृषि निवेशों की व्यवस्था करना।
- प्रदेश की समस्याग्रस्त भूमि यथा जलमग्न, ऊसर, बंजर, बीहड़, आदि को उपचारित करके कृषि क्षेत्रफल में वृद्धि करते हुए उपजाऊ बनाना।
- कृषि नीति 2013 के सफल क्रियान्वयन का सत्त अनुश्रवण कर निर्धारित प्रतिमानों को साकार करना।

कृषि उत्पादन में प्राकृतिक आपदाओं, कीटरोग आदि जोखिम के कारण होने वाली क्षति की पूर्ति के लिए प्रदेश में संचालित कृषि बीमा योजनाओं को व्यापकता प्रदान करना।

आगरा – एक परिचय

आगरा जिला छह तहसीलों और 15 ब्लाकों में विभाजित है। जिले में नयी पंचायत की कुल संख्या 114 है। जबकि ग्रामसभा 695 पर है। कुल जनसंया 906 है जहॉ आगरा का कुल क्षेत्रफल 4041 किमी है जिसमें 3793.04 किमी ग्रामीण क्षेत्र और 247.96 किमी शहरी क्षेत्र शामिल हैं। आगरा की आबादी 44,18,797 लोगों की है। आगरा उत्तर प्रदेश के सबसे अधिक आबादी वाले शहरों में से एक है और भारत में 24 वां आबादी वाला जनपद है।

अर्थव्यवस्था –

मुख्य रूप से आगरा जिले की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित है। जबकि आगरा शहर की अर्थव्यवस्था का आधार लघु उद्योग, वाणिज्य और व्यापार है। प्रमुख फसलें गेहूँ, धान, बाजरा, सरसों, पेठा आदि हैं। आगरा की कुल अर्थव्यवस्था का लगभग 40 प्रतिशत उद्योग (प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से) पर निर्भर है। 7200 से अधिक छोटे पैमाने पर औद्योगिक इकाइयों को जिले में सभी बख्शा कर दिया गया है। आगरा शहर चमड़े के सामान, हस्तशिल्प, ज़ारी ज़ारदोजी, चमत्कार और पत्थर नक्काशी और जड़ना कार्य के लिए प्रसिद्ध है। आगरा मिठाई (पेठा) और स्नेक (दालमोठ और गजक) के लिए प्रसिद्ध है।

आगरा जिला यू0पी0 के दक्षिण–पश्चिम अर्ध शुष्क क्षेत्र में स्थित है। यह 27.20 उत्तर की ऊँचाई पर और 77.90 पूर्व के देशांतर पर स्थित है। चंबल नदी जिले के दक्षिणी सीमा बनाती है और पश्चिम से पूर्व की ओर बहती हुई अलग जिला भिंड (मध्य प्रदेश) उत्तर आगरा में फिरोजाबाद और इटावा जिलों से घिरा है।

जिले की औसत वर्षा (वाार्षिक) 750 मिमी है। तापमान क्रमशः 40 डिग्री सेंटीग्रेट (दिसंबर–जनवरी के दौरान) से 480 डिग्री सेंटीग्रेट (मई–जून के दौरान) तक बदलता रहता है। जिले में छ': थेल्स, 15 ब्लॉक और 904 गांव शामिल है। 899/किमी 2 की घनत्व और 62.60 प्रतिशत की साक्षरता के साथ कुल रिपोर्ट की गई आबादी 3.62 मिलियन है। जिले का कुल सूचित क्षेत्र 398460 हेक्टेयर है, जिसमें से शुद्ध बुवाई क्षेत्र 285496 हैक्टेयर और सिंचित क्षेत्र 139.51 प्रतिशत की तीव्रता के साथ 235063 हैक्टेयर है।

तालिका–2 जिले में खेती की जाने वाली प्रमुख फसलों के मिट्टी प्रकार एवं उत्पादन क्षेत्रफल

क्र०स०	मिट्टी के प्रकार	क्षेत्रफल है0 में	क्षेत्रफल प्रतिशत
1	रेतीली मिटटी	49741	13.22
2	रेतीली मिटटी	169532	45.07
3	कटाव मिट्टी	17940	4.77
4	सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी	7800	20.74
5	अन्य	60924	16.20

स्त्रोत : आगरा कृषि विज्ञान केन्द्र आगरा।

तालिका–3 जिले में खेती की जाने वाली प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल – उत्पादन और उत्पादकता

क्र०स०	फसल	क्षेत्रफल	उत्पादन	उत्पादकता
1	धान	5215	112590	21.59
2	गेहू	140427	5199640	37.03

3	जौं	7058	232750	32.98
4	ज्वार	103	1010	9.74
5	बाजरा	115736	2046640	16.68
6	मक्का	129	2220	17.21
7	उड़द	179	1140	6.37
8	मूँग	255	1700	6.67
9	मसूर	581	10500	18.07
10	चना	1281	23790	18.57
11	मटर	82	1840	22.46
12	अरहर	827	5750	6.95
13	सरसों	52639	916480	17.41
14	तिल	1885	3730	1.98
15	आलू	56303	14851040	263.77
16	कपास	370	990	2.67

स्त्रोत : आगरा कृषि विज्ञान केन्द्र आगरा।

तालिका–4 उपलब्ध साहित्य समीक्षा – राष्ट्रीय स्तर पर

क्र0स0	**वर्ष**	**लेखक**	**श्शीर्षक**	**उद्देश्य**	**निष्कर्ष**
1.	1981	रमा शंकर रॉय	कृषि विकास–गाजीपुर जनपद पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत	इस अध्ययन का उदेश्य यह है कि क्षेत्र के सन्तुलित विकास हेतु प्रत्येक गाम को नियोजन की इकाई मानकर उसमें सभी विकास कार्यक्रम कार्यवन्तित किये जाये।	उपरोक्त अध्ययन में वर्तमान परियोजना को एकीकृत क्षेत्रिय विकास नियोजन हेतु मैक्रोलेबिल प्लानिंग की प्रक्रिया अपनाई गई है। इस में यह ध्यान रखा जाता है जो भी विकास कार्यक्रमों प्रस्तावित किये जायें उनकी स्थिति भी सुनिश्चित की जाये।
2.	1996	राघवेन्द्र नाथ अग्निहोत्री	उत्तर–प्रदेश में भूमिहीन कृषि श्रमिकों की समस्याओं पर समीक्षात्मक अध्ययन।	यह उद्येश्य में भूमिहीन कृषि श्रमिकों को रोजगार की व्यवस्था करना।	भूमिहीन कृषि श्रमिकों की मुख्य समस्या यह है कि श्रमिकों को पूरे वर्ष में रोजगार की प्राप्ति न होना। अर्थात अर्द्ध बेरोजगारी होना तथा परिवार के सभी सदस्यों को योग्यता अनुसार रोजगार न मिलना। जिससे उनके आय का स्रोत सीमित व उनकी आर्थिक दशा कमजोर होती है।
3.	2004	जे सिंह और आर एस सिंधू	फसल विविधिकरण में गिरावट के कारकः पंजाब राज्य में विकास का विश्लेषण।	कृषि क्षेत्र में फसल उत्पादन में कृषि का योगदान व कृषि क्षेत्र की वृद्धि में विविधता आदि का विभिन्न क्षेत्रों में सूचकांक की गणना करके विविधीकरण किया गया है।	यह अध्ययन में यह पाया गया है कि राज्य के लिए डी आई 1970– 71 के अनुसार घटकर 2001–02 में 0.591 रह गया है। फसल उत्पादन में वृद्धि व उत्पादन मिश्रण समय के साथ–साथ लगातार कम होता गया है।
4.	2006	श्रीमती ऋचा सक्सेना	कानपुर देहात के कृषि विकास में संस्थागत	यह अध्ययन में शोधार्थी द्वारा इस शोध के माध्यम से कृषि ऋण प्रदान करने वाली	यह अध्ययन में आशय यह है कि बुनियादी उद्देश्य विकास करना सामाजिक न्याय दिलाना तथा उसके जरिये गरीबी उन्मूलित

			वित्तिय मध्यस्थों का योगदान।	विभिन्न संस्थागत वित्तिय मध्यस्थो की कार्यप्रणाली व कृषि विकास का प्रभाव ज्ञात करना।	करना आर्थिक शक्तियों का विकेन्द्रकरण करना साधनों का अनुकूलतम उपयोग करना। कृषि विकास के लिए पूर्ण रूप से वित की स्थापना करना।
5.	2007	उमा रतन यादव	झॉसी मण्डल में जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि विकास।	कृषि की उत्पादकता एवं अच्छे किस्म के बीजों से खेती करने के लिए कृषि में उत्पादन प्रकिया को बढ़ावा देने एवं क्षेत्र के निवासी पर ध्यान केंद्रित करना।	कृषि विकास से तात्पर्य उत्पादन वृद्धि से नहीं है। यह कृषि के सम्पूर्ण अंगों के विकास से सम्बंधित है। जनसंख्या वृद्धि को आधारभूत कारक मानते हुए कृषि विकास पक्षो या भूमि क्षमा, सस्य त्रीवता सस्य विविधता, सस्य सकेन्द्र, प्रतिरूप कृषि तकनीकी उन्नत प्रभावकारी कारक के रूप में निरूपित किया गया है।
6.	2008	चन्द्रामनी यादव	कृषि विकास–रायबरेली जनपद	वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्येश्य रायबरेली जनपद में कृषि विकास पर प्राविधिकी के पड़ने वाले प्रभावों का ऑकलन करना, एवं कृषि विकास आयोजना का निर्माण करना।	कृषि विकास में कृषि प्राथमिक आर्थिक किया है कि कृषि विकास के मापन हेतु आर्थिक सूचकांक एवं विकासीय सूचकांकों को सम्मिलित किया गया है। आर्थिक सूचकांक भूमि की उत्पादकता व क्षमता को एवं कृषि की समस्याओं को सीमांकित कर समंवित कृषि विकास आयोजना प्रस्तुत की गई है।
7.	2012	राम कुमार मोर्य	कृषि एवं कृषि विकास पर नवीनीकरण का प्रभावः फैजाबाद जनपद	कृषि नीवनीकरणों के प्रति किसानों का ज्ञान तथा रुझान एवं उन्हें सरकारी व अर्द्ध सरकारी प्रयत्नों की जानकारी प्राप्त करना	इस अध्ययन में जनपद में विविध समयावधि में कृषि की रूपरेखा के अंतर्गत नवीनीकरण के फलस्वरूप कृषि रूपांतर को स्पष्ट करता है।
8.	2013	श्रीमती कंचन श्रीवास्तव	बॉदा जनपद के आर्थिक विकास में कृषि–आधारित औद्योगिकरण।	यह अध्ययन का उद्येश्य यह है कि कृषि पर आधारित उद्योग, कृषि कच्चामाल एवं रोजगार सृजन आदि आर्थिक उपयोगिता में वृद्धि करना	यह अध्ययन में संचालित उद्योग को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। किसी अनुसंधान में समस्याओं का मूल्यांकन व समीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। आर्थिक विकास में उनकी अनेक समस्याओं का समाधान हुआ है। जैसे– कच्चे माल की पूर्ति, वित की समस्या आदि।
9.	2013	एम डी रईस अहमद	भारत में सगम्य कृषि का विकासः एक अध्ययन	यह अध्ययन में कृषि क्षेत्र का तुलनात्मक विश्लेषण करने व प्रमुख राजय अर्थव्यवस्था	यह अध्ययन में शोधकर्ता ने कृषि विकास को बढ़ावा देने के साथ साथ कृषि की महत्व व हिस्सेदारी रोजगार सृजन और

			उत्तर प्रदेश में।	विकास एवं कृषि विकास का मूल्यांकन करने एवं क्षेत्र का असमानता की जॉच करने के लिए आर्थिक प्रभाव व कारक का विश्लेषण करना।	निर्यात आदि का अन्वेषण किया है एवं कृषि को बढ़ावा देने के लिए प्रयत्न किये हैं।
10.	2017	मुमताज अहमद	कृषि विकास एवं नियोजनः एक अध्ययन आजमगढ़ जनपद	कृषि उत्पादकता और कृषि गहनता के क्षेत्रों को उनके विकास स्तर पर उच्च, मध्यम तािा न्यून क्षेत्रों में विभाजित करना, तथा कृषि का स्तर निर्धारित करना।	कृषि विकास से तात्पर्य केवल उत्पादकता में वृद्धि से नहीं है। अतः कृषि आर्थिक किया होने के कारण इसे विकसित करने हेतु भूमि, श्रम, पूंजी व संगठन की कुशल व्यवस्था ही आवश्यकता है। कृषि विकास कृषि के सम्पूर्ण अंगों के विकास से संबंधित है।
11.	2019	विमलेश कुमार	उत्तर प्रदेश में फसल में परिवर्तन एक अंतर–संभागीय अध्ययन	प्रदेश में विभिन्न संभागों मं आर्थिक विकास की स्थिति ज्ञात करना। फसल प्रतिरूप में परिवर्तन/स्थिरता के कारणों को ज्ञात करना।	यह अध्ययन में कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियॉ हैं। जहॉ अधिकांश जनसंख्या का जीवन और जीविका का आधार कृषि है। यहॉ बड़े भू भाग पर कृषि की जाती है। देश के अनाज उत्पादन में उत्तर प्रदेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यहॉ सर्वाधिक स्तर पर कृषि की जाती है।

तालिका–5 उपलब्ध साहित्य समीक्षा अन्ताराष्ट्रीय स्तर पर

क्र0स0	वर्ष	लेखक	श्शीर्षक	निष्कर्ष
1.	2007	मोरो एंड एलवाय	द फेटरडिटरमाइनिंग रेन फेड राइस प्रोउक्शन इन लोकल गवर्मेन्ट एरिया ऑफ आदमावा एस्टेट	इस अध्ययन में किसानों के विकास के लिए कृषक को सस्ता तथा सरकारी दर पर खद्य आदि उत्पादन हेतु उपलब्ध कराना एवं कृषकों को पूर्ण सहायता उपलब्ध कराना।
2.	2010	क्रवेरी	द रिक्स एंड रिटर्न फार्म डाई लेड फारमिंग सिस्टम इन आस्ट्रेलिया	इस अध्ययन में यह कहा गया है कि कृषि विकास की उत्पादकता में शुष्क भूमि को उत्पादन हेतु बनाना तथा उत्पादन प्रकिया को बढ़ावा देना।
3.	2011	पेराडास्म	द इंटरनल असेसमेंट ऑफ एग्रीकल्चर नॉलेज साइंस एंड अेक्नोलॉजी ऑफ डेवलपमेंट	मौलिक सेवा बेहतर कराने के लिए तथा कृषकों के विकास हेतु करीबी को दूर करने के लिए उनके हित के बारे में सोचना तथा सहायता उपलब्ध कराना।
4.	2015	नूरजजमान	इफेक्ट ऑफ टेक्नोलॉजी चेंज ऑन एग्रीकल्चर डेवलपमेंट	इसमें यह कहा गया है कि कृषि को विकसित करने के लिए सभी वर्ग के कृषकों को विभिन्न तरीकों के कृषि उर्वरक तथा अच्छे किस्म के बीज उपलब्ध कराकर उत्पादन में बढ़ावा देना।
5.	2016	मो. नजरूल	द रोल ऑफ बे बा ऑन एग्रीकल्चर डेवलपमेंट इन	कृषि के विकास में किसानों को उनकी मांग या आवश्यकता अनुसार सहायता देना तथा

		इस्लाम सरकार	बांगलादेश	कृषि प्रवाह को बढ़ावा देना। तथा विकास के अंतर्गत कृषि कार्य की उन्नति के प्रयास किये गये हैं।

शोध अन्तराल :–

1. शोधार्थी ने यह पाया है कि उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्र में कृषि विकास से संबंधित शोध कार्य बहुत ही सूक्ष्म रूप से किया गया है।
2. उपयुक्त वर्णित पुनर्वालोकन के अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थी ने यह पाया है कि आगरा जनपद में प्रस्तावित विषय पर चुने हुये कारकों के आधार पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।
3. शाधार्थी ने यहा पाया है कि कृषि में रोजगार व आर्थिक नीतियों से संबंधित, शोध कार्य आगरा जनपद में नहीं हुआ है।

अध्ययन की आवश्यकता–

उपर्युक्त पुनर्वालोकन के माध्यम से यह अनुमार लगाया जा सकता है कि कई लेखकों ने कृषि उघोग के क्षेत्र में कई अलम–अलग दिशाओं में अध्ययन किया है। परन्तु शोधार्थी द्वारा किये जाने वाले शोध अध्ययन में उन दिशाओं या उन संभावनाओं को लिया गया है जो आगरा जिले के कृषकों को कृषि हेतु उत्पादन की प्रक्रिया को बढ़त देने के लिए एवं कृषि के क्षेत्र में उन्नति व विकास एवं भविष्य में कृषि विकास क्षेत्र को एक मजबूत आधारशिला प्रदान कर सकता है। अधिकांश अध्ययन भारत में आगरा के अतिरिक्त देश के अन्य राज्यों व कृषि विकास के ढॉचे पर ध्यान केन्द्रित है। परन्तु यह उत्तर प्रदेश राजय के आगरा जिले के क्रषकों को कृषि हेतु प्रोत्साहन करने के लिए एवं आर्थिक नीति पर ध्यान केन्द्रित करना होगा।

शोध प्रश्न–

1. आगरा जिले में कृषि विकास के लिए प्रक्रिया क्या है? वे कौन से कारक हैं जो कि कृषि विकास को प्रभावित करते हैं?
2. उत्तर प्रदेश के जिलों में कृषि के लिए बनायी गई प्रक्रिया व योजना की वर्तमान स्थिति क्या है?
3. आगरा परिक्षेत्र के अन्तर्गत कृषि कार्य की स्तरता जानना।

शोध उद्देश्य–

1. देश एवं प्रदेश की कृषि विकास के लिए नीतियों एवं शुरू किये गये कार्यक्रमों का अध्ययन।
2. वर्तमान में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का कृषि विकास में योगदान।
3. वर्तमान में कृषि विपणन कार्यक्रमों का कृषि विकास में योगदान।
4. वर्तमान में कृषि ऋण कार्यक्रमों का कृषि विकास में योगदान।
5. कृषि को प्रदेश एवं देश का एक अग्रणीय क्षेत्र बनाने हेतु एक समग्र व सम्भावित कार्यक्रमों को बनाने हेतु सुझाव।

शोध परिकल्पना

H_{01}: वर्तमान में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों का कृषि विकास में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं है।

H_{02}: वर्तमान में कृषि विपणन कार्यक्रमों का कृषि विकास में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं है।

H_{03}: वर्तमान में कृषि ऋण कार्यक्रमों का कृषि विकास में कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं है।

शोध रूप रेखा–

अध्ययन का स्त्रोत– प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीय समंको द्वारा आधारित होगा।

1. प्राथमिक समंको के अन्तर्गत नयादर्श परिवारों से प्रत्यक्ष व्यक्तिगत सम्पर्क कर अनुसूची भरकर जानकारियां हांसिल की जायेंगी। जिला पंचायत आगरा से संबंधित आकड़े अध्ययन के लिए एकत्रित किया जायेगा एवं ग्राम पंचायतों के सचिव एवं ग्राम प्रधान सरपंच से सम्पर्क, ग्राम संबंधित आंकड़ो का संकलन किया जायेगा।

2. द्वितीय संमको के अन्तर्गत शोध प्रबंध इंटरनेट, कृषि विकास मंत्रालय के आंकड़े, शोधपत्र, समाचार पत्र पत्रिकाएं इतयादि के द्वारा आंकड़ो का संकलन किया जायेगा।

आंकड़ो का विश्लेषण– प्रस्तुत शोध में उल्लेखित उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्न मापों तकनीकों का प्रयोग किया जायेगा, जिनके अन्तर्गत, प्रतिशत विधि औसत विधि, गुण संबंध, कार्ड वर्ग परीक्षण इत्यादि है।

सांख्यकी उपकरण – प्रवृत्ति विश्लेषण, प्रतीपगमन विश्लेषण, अनुसंधान मूलक कारक विश्लेषण, बहुमापदंड, निर्णय, अंकन।

अध्ययन अवधि– अध्ययन अवधि 2001–2022 तक होगा।

भौगोलिक क्षेत्र – यह अध्ययन भारत के राज्य उ0 प्र0 के जिला आगरा के कृषि क्षेत्र के आर्थिक विकास पर होगा। यह अध्ययन के लिए आगरा जिले के कृषि क्षेत्र से 15 विकास खण्डो को लिया है। शोधार्थी ने इन 15 विकास खण्डों से उच्च स्तर के 6 ब्लॉक को चयनित किया है।

शोध प्रचना–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में हमने आगरा जिले के कृषि विकास में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, कृषि विपणन, कृषि ऋण कार्यक्रमों की भूमिका के अध्ययन के लिए आगरा विकास खण्ड में जिस खण्ड में सर्वाधिक कृषक है उन 6 खण्डों को चुना है। उन चयनित 6 खण्डों में से 1078 कृषकों को न्यादर्श के रूप में चुना जायेगा, जो कि खण्ड के अनुसार कुल किसानों कि जनसंख्या का प्रतिशत 1 प्रतिशत लिया गया है जिसमें कि मध्यम वर्ग एवं गरीबी रेखा के नीचे रहने वाले कृषक शामिल हैं। और न्यादर्श कृषकों के चयन हेतु अपनाई गई पद्धति निम्नलिखत तालिका (4,5) द्वारा स्पष्ट की गई।

तालिका –6 आगरा जिला की तहसील व विकासखण्ड के अनुसार किसानों की कुल जनसंख्या

तहसील का नाम	तहसील के अनुसार कुल जनसंख्या	तहसील के अनुसार किसानों की जनसंख्या	कुल आगरा के किसानों का प्रतिशत	खण्ड का नाम	खण्ड के अनुसार जनसंख्या	खण्ड के अनुसार कुल किसान	कुल किसानों का प्रतिशत खण्ड के अनुसार
बाह	430523	54702	22.04	बाह	147452	18048	12.23
				जैतपुर कलान	121983	17383	14.25
				पिनाहट	**126168**	**18392**	**14.57**
फतेहाबाद	460592	46209	18.62	शमशबाद	204121	20924	10.25
				फतेहाबाद	**200049**	**24220**	**12.10**
खेरागढ़	466809	46063	18.57	जगनेर	112360	12621	11.23
				खेरागढ़	157936	14791	9.36
				सैंया	**163468**	**17606**	**10.77**
				अकोला	162499	11304	6.95
किरौली	506777	37988	15.30	फतेहपुरसीकरी	163448	13872	8.48
				अछनेरा	**195269**	**15815**	**8.09**
आगरा	2186655	35787	14.17	बिचपुरी	174515	5861	3.35

				बरोली अहीर	**274601**	**17475**	**6.36**
एत्मादपुर	367441	28002	11.28	**खंदौली**	**184644**	**14152**	**7.66**
				एत्मादपुर	160900	13661	8.49
कुल	4418797	248151	100	कुल	2549413	236125	100

Source : census 2011, govt. of India

तालिका –7 कृषकों की संख्या का नमूना

	खण्ड के नाम	**खण्ड के अनुसार कुल किसान**	**खण्ड के अनुसार कुल किसान का (.1) प्रतिशत**
1	पिनाहट	18392	184
2	फतेहाबाद	24220	242
3	सैंया	17606	177
4	अछनेरा	15815	158
5.	खंदौली	14152	142
6	बरौली अहीर	17475	175
	कुल	**कृषकों की संख्या का नमूना**	**1078**

तालिका –8 उद्देश्यों को प्राप्त करने की रूपरेखा

	उद्देश्य	**उद्देश्यों को प्राप्त करने की प्रकिया**
1	देश एवं प्रदेश की कृषि विकास के लिए नीतियों एवं शुरु किये गये प्रोग्रामों का विश्लेषण।	देश एवं प्रदेश की कृषि विकास के लिए नीतियों एवं शुरू कये गये प्रोग्रामों का विश्लेशण का अध्ययन किया जायेगा। संबंधित संस्थानों द्वारा माध्यमिक सुचना का उपयोग करके प्रवृति विश्लेषण किया जायेगा।
3	वर्तमान में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी प्रोग्रामों का कृषि विकास में योगदान।	कृषि क्षेत्र में कृषि विकास में आई सी टी का योगदान को माध्यमिक और प्राथमिक डेटा उपयोग करके मापा जायेगा। प्रतिगमन और सहसंबंध विधियों का उपयोग करके डेटा विश्लेषण किया जायेगा।
4	वर्तमान में कृषि विपणन प्रोग्रामों का कृषि विकास में योगदान।	कृषि क्षेत्र में कृषि विकास में कृषि विपणन का योगदान को माध्यमिक और प्राथमिक डेटा उपयोग करके मापा जायेगा। प्रतिगमन और सहसंबंध विधियों का उपयोग करके डेटा विश्लेषण किया जायेगा।
5	वर्तमान में कृषि ऋण प्रोग्रामों का कृषि विकास में योगदान।	कृषि क्षेत्र में कृषि विकास में कृषि ऋण का योगदान को माध्यमिक और प्राथमिक डेटा उपयोग करके मापा जायेगा। प्रतिगमन और सहसंबंध विधियों का उपयोग करके डेटा विश्लेषण किया जायेगा।
6	कृषि को प्रदेश एवं देश का एक अग्रणीय क्षेत्र बनाने हेतु एक समग्र व सम्भावित कार्यक्रमों को बनाने हेतु सुझाव।	प्राप्त परिणामें और शोध क्रिया विधि के द्वारा कार्य योजना बनायी जायेगी। जिससे कृषि क्षेत्र के विकास को अग्रणी बनाया जा सके।

प्रस्तावित अध्याय

प्रथम अध्याय– प्रस्तावना– कृषि क्षेत्र का अर्थव्यवस्था में योगदान

द्वितीय अध्याय– एक परिचय

- उत्तर प्रदेश का परिचय।

- आगरा जिले का परिचय।

तृतीय अध्याय– पुनर्वालोकन और शोध प्रारूप

चतुर्थ अध्याय– विश्लेषण एवं व्याख्या।

पंचम अध्याय– निष्कर्ष एवं सुझाव।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. रमा शंकर रॉय (1981)–कृषि विकास– गाजीपुर जनपद, पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत
2. राघवेन्द्र नाथ अग्निहोत्री (1996) – उत्तर प्रदेश में भूमिहीन कृषि श्रमिकों की समस्याओं पर समीक्षात्मक अध्ययन।
3. जे सिंह और आर एस सिंधू (2004) – फसल विविधिकरण में गिरावट के कारक– पंजाब राज्य में विकास का विश्लेषण।
4. रीमती ऋचा सक्सेना (2006) – कानपुर देहात के कृषि विकास में संस्थागत वित्तीय मध्यस्थों का योगदान।
5. उमा रतन यादव, (2006) – झॉसी मण्डल में जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि विकास।
6. चन्द्रा मनी यादव, (2008) – कृषि विकास– रायबरेली जनपद,
7. कुमार विमल (2005) –ग्राम विकास और अप्रवासी भारतीय, भारतीय पक्ष 2005
8. गोविंदाचार्य के.एन. (2009) –केन्द्रीय बजट 7 प्रतिशत गांव को मिल भारतीय पक्ष जुलाई 2009
9. सिंह, डॉ. रमन (2009) –रोजगार एवं नियोजन नवंबर 2009 पृष्ठ क्रमांक 2
10. चौहान सुरेन्द्र सिंह (2009) –ऐसे होगा गांव समग्र विकास राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आर्टिकल पंचजन्य 2009
11. यादव डॉ. हनुमंत (2010) –दक्षिण कोरिया में ग्राम विसा आर्टिकल देशबंधु
12. यादव, शंभूनाथ (2010) –निरंतर विकास और पंचायत की भूमिका, कुरूक्षेत्र पत्रिका,पृष्ठ 3 से 8
13. यादव, अखिलेश चंद्र (2010) –बदलेत गांव, उभरता देश कुरूक्षेत्र पत्रिका, पृष्ठ कं. 8 से 18 तक
14. मीना जनक सिंह (2010) –ग्रीमण विकास के विविध आयाम पृष्ठ 34 से 53 तक

15. दत्त, गौरव (2011) –भारतीय अर्थव्यवस्था, एस.चंद एण्ड कम्पनी लिमिटेड रामनगर नई दिल्ली

16. मनीषा अक्टूबर (2011) –कृषि विकास में बहुविद्य पहलों का स्वरूप कुरूक्षेत्र पत्रिका पृष्ठ 3 से तक

17. सिंह मनकित (2011) –एक ज्वलंत मुद्धा ग्राम प्रधान एवं कृषि विकास जागरण जंक्शन पेज नं. 1

18. मूर्ति अरविंद (2011) –ग्राम सभा बनाम ग्राम पंचायत हिन्दी सिटीजन आर्टिकल फरवरी 2011

19. चंदन मुकेश पाण्डेय (2012) –भारत में कृषि विकास कार्यक्रम आर्टिकल लक्ष्य 2012

20. सागर आशीष (2012) –केन्द्रीय कृषि विकास रिपोर्ट 2012–13 बुंदेलखंड पोर्टल

21. कुमार अवधेश (2012) –संवाद सेतु ग्राम विकास राष्ट्रीय दिल्ली संस्करण पेज

22. दुबे डॉ. साचीदानंद (2013) –मनरेगा कृषि विकास समाज न्यूज पेज 1 2013

23. अख्तर कमाल (2013) –ग्राम पंचायत सफल मीलो का दैनिक जागरण सिम्बर 2013

24. कुमार, राकेश अक्टूबर (2013)–ग्रामीण भारत का सुधरता जीवन स्तर कुरूक्षेत्र, पृष्ठ 20 से 23

25. कुमार यशवंत (2013) –अपने बूते गांव का विकास आर्टिकल पत्रिका न्यूज मार्च 2013

BIBLIOGRAPHY

- http:agricoop.nic.in/
- http:agricollegenews.com/
- http://www.apeda.in
- http://www.upagriculture.org/
- http://rural.nic.in
- http://upagipardarshi.gov.in
- http://agra.nic.in